C.B.S.E

कक्षा : 10

विषय : हिंदी 'अ'

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।

4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।

5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।

6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

खंड - क

[अपठित अंश]

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×2=2) (2×4=8) [10]

महात्मा गांधी ने कोई 12 साल पहले कहा था- मैं बुराई करने वालों को सजा देने का उपाय ढूँढने लगूँ तो मेरा काम होगा उनसे प्यार करना और धैर्य तथा नम्रता के साथ उन्हें समझाकर सही रास्ते पर ले आना। इसलिए असहयोग या सत्याग्रह घृणा का गीत नहीं है। असहयोग का मतलब बुराई करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है।

आपके असहयोग का उद्धेश्य बुराई को बढ़ावा देना नहीं है। अगर दुनिया बुराई को बढ़ावा देना बंद कर दे तो बुराई अपने लिए आवश्यक पोषण के अभाव में अपने-आप मर जाए। अगर हम यह देखने की कोशिश करें कि आज समाज में जो बुराई है, उसके लिए खुद हम कितने जिम्मेदार हैं तो हम देखेंगे कि समाज से बुराई कितनी जल्दी दूर हो जाती है। लेकिन हम प्रेम की एक झूठी भावना में पड़कर इसे सहन करते हैं। मैं उस प्रेम की बात नहीं करता, जिसे

पिता अपने गलत रास्ते पर चल रहे पुत्र पर मोहांध होकर बरसाता चला जाता है, उसकी पीठ थपथपाता है; और न मैं उस पुत्र की बात कर रहा हूँ जो झूठी पितृ-भक्ति के कारण अपने पिता के दोषों को सहन करता है। मैं उस प्रेम की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। मैं तो उस प्रेम की बात कर रहा हूँ, जो विवेक युक्त है और जो बुद्धियुक्त है और जो एक भी गलती की ओर से आँख बंद नहीं करता है। यह सुधारने वाला प्रेम है।

1. गांधीजी बुराई करने वालों को किस प्रकार सुधारना चाहते हैं?

   उत्तर : गांधीजी बुराई करने वालों को प्रेम, धैर्य तथा नम्रता के साथ समझाकर सुधारना चाहते हैं।

2. बुराई को कैसे समाप्त किया जा सकता है?

   उत्तर : यदि हम बुराई को बढ़ावा देना बंद कर देंगे तो बुराई स्वयं समाप्त हो जाएगी।

3. 'प्रेम' के बारे में गांधीजी के विचार स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर : गांधीजी के अनुसार प्रेम का अर्थ मोह में अंधा होकर अपने प्रिय की गलतियों का समर्थन करना या बढ़ावा देना नहीं है। बल्कि उनके अनुसार उन गलतियों को सुधारना ही सही अर्थों में प्रेम की परिभाषा है।

4. असहयोग से क्या तात्पर्य है?

   उत्तर : असहयोग का मतलब बुरा करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है। अर्थात् बुराई का त्याग करना ही असहयोग है।

5. उपर्युक्त गद्यांश में हमें कौन-सी शिक्षा मिलती है?

   उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश से हमें प्रेम, धैर्य और नम्रता की शिक्षा मिलती है।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

   उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक 'प्रेम' है।

खंड – ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र. 2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x4=[4]

(क) अध्ययन करने वाले लोग अच्छा लिख पाते हैं। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जो लोग अध्ययन करते हैं, वे अच्छा लिख पाते हैं।

(ख) वह कार तेजी से आई और खंभे से टकरा गई। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : वह कार तेजी से आकर खंभे से टकरा गई।

(ग) मजदूर को मेहनत करने पर लाभ नहीं मिलता। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : मजदूर मेहनत करता है, परन्तु उसे लाभ नहीं मिलता।

(घ) राम बोला, मैं दिल्ली जा रहा हूँ। (मिश्र वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)

उत्तर : राम ने कहा कि वह दिल्ली जा रहा है।

प्र. 3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए: 1x4=[4]

(क) वह <u>जाता है।</u>

उत्तर : जाता है - अकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, सामान्य वर्तमान, अन्यपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन।

(ख) सफेद <u>घोड़ा</u> तेज भागता है।

उत्तर : घोडा- जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, 'भागता है' क्रिया का कर्ता।

(ग) <u>तुम्हें</u> पुस्तक ध्यान से पढ़नी चाहिए।

उत्तर : तुम्हें- सर्वनाम, मध्यमपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन।

(घ) <u>अरे</u>, तुम भी आ गए!

उत्तर : अरे- विस्मयादि बोधक, एकवचन, पुल्लिंग।

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x4=[4]

1. आज संस्था द्वारा जगह-जगह पेड़ लगाए गए। (कर्तृवाच्य में बदलिए।)
   उत्तर : आज संस्था ने जगह-जगह पेड़ लगाए।

2. मैंने खाना खाया। (कर्मवाच्य में बदलिए।)
   उत्तर : मुझसे खाना खाया गया।

3. राधिका क्षण भर के लिए भी शांत नहीं बैठती है। (भाववाच्य में बदलिए।)
   उत्तर : राधिका से क्षण भर के लिए भी शांत नहीं बैठा जाता।

4. मूर्तिकार मूर्ति गढ़ता है। (कर्मवाच्य में बदलिए।)
   उत्तर : मूर्तिकार द्वारा मूर्ति गढ़ी जाती है।

प्र. 5. निम्नांकित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए: 1x4=[4]

1. कोउ अंतडिनी की पहिरि माल इतरात दिखावट।
   कोउ चर्वी लै चोप सहित निज अंगनि लावत।
   उत्तर : वीभत्स रस

2. कनक भूधराकार सरीरा
   समर भयंकर अतिबल बीरा।
   उत्तर : अद्भुत रस

3. मेरो मन अनत सुख पावे
   जैसे उडी जहाज को पंछी फिर जहाज पे आवै।
   उत्तर : शांत रस

4. मैया मोरी दाऊ ने बहुत खिजायो।
   मोसों कहत मोल की लीन्हो तू जसुमति कब जायो।
   उत्तर : वात्सल्य रस

खंड - ग

[पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पुस्तक]

प्र. 6. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2+2+2=[6]

फ़ादर बुल्के संकल्प से संन्यासी थे। कभी-कभी लगता है वह मन में संन्यासी नहीं थे। रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे। दसियों साल बाद मिलने के बाद भी उसकी गंध महसूस होती थी। वह जब भी दिल्ली आते जरूर मिलते-खोजकर, समय निकालकर, गर्मी, सर्दी, बरसात झेलकर मिलते, चाहे दो मिनट के लिए ही सही। यह कौन संन्यासी करता है? उनकी चिंता हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की चिंता थीं। हर मंच में इसकी तकलीफ़ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते। बस इसी एक सवाल पर उन्हें झुंझलाते देखा है और हिंदी वालों द्वारा ही हिंदी की उपेक्षा पर दुख करते उन्हें पाया है। घर-परिवार के बारे में, निजी दुख-तकलीफ़ के बारे में पूछना उनका स्वभाव था और बड़े से बड़े दुख में उनके मुख से सांत्वना के जादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भर देता था जो किसी गहरी तपस्या से जनमती है। 'हर मौत दिखाती है जीवन को नयी राह'। मुझे अपनी पत्नी और पुत्र की मृत्यु याद आ रही है और फ़ादर के शब्दों से झरती विरल शांति भी।

(क) 'फ़ादर' को कौन-सी चिंता थी?

उत्तरः 'फ़ादर' को हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की चिंता थी।

(ख) लेखक को 'फादर' संन्यासी क्यों नहीं महसूस होते थे?

उत्तर : फादर जिस किसी के भी साथ रिश्ता बनाते थे, वे फिर कभी तोड़ते नहीं थे इसलिए लेखक को फादर संन्यासी नहीं महसूस होते थे।

(ग) फादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नयी छवि प्रस्तुत की है, कैसे?

उत्तर : प्रायः संन्यासी सांसारिक मोह-माया से दूर रहते हैं। जबकि फ़ादर ने ठीक उसके विपरीत छवि प्रस्तुत की है। परंपरागत संन्यासियों के परिपाटी का निर्वाहन न कर, वे सबके सुख-दुख में शामिल

होते। एक बार जिससे रिश्ता बना लेते; उसे कभी नहीं तोड़ते। सबके प्रति अपनत्व, प्रेम और गहरा लगाव रखते थे। लोगों के घर आना-जाना नित्य प्रति काम था। इस आधार पर कहा जा सकता है कि फ़ादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग छवि प्रस्तुत की है।

प्र. 7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=[8]

1. बिस्मिल्ला खाँ जीवन भर ईश्वर से क्या माँगते रहे, और क्यों? इससे उनकी किस विशेषता का पता चलता है?

   उत्तर : बिस्मिल्ला खाँ भारत के सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक थे। वे अपनी कला के प्रति पूर्णतया समर्पित थे। उन्होंने जीवनभर संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की इच्छा को अपने अंदर जिंदा रखा। वे अपने सुरों को कभी भी पूर्ण नहीं समझते थे इसलिए खुदा के सामने वे गिड़गिड़ाकर कहते - "मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।" खाँ साहब ने कभी भी धन-दौलत को पाने की इच्छा नहीं की बल्कि उन्होंने संगीत को ही सर्वश्रेष्ठ माना। वे कहते थे - "मालिक से यही दुआ है - फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।"

   इससे यह पता चलता है कि बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे।

2. एक कहानी यह भी' लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तित्वहीन क्यों कहा है?

   उत्तर : लेखिका की माँ अशिक्षित एवं घरेलू महिला थीं। लेखिका के माँ के साथ लेखिका के पिताजी का व्यवहार अच्छा नहीं था। वे पूरी तरह से अपने पति के अधीन थीं तथा सदैव उनसे भयभीत रहती थीं। वे कभी पति से लडाई-झगडा नहीं करती थीं। यही नहीं वे अपने पति की अनुचित डाँट-फटकार का भी कभी प्रतिरोध नहीं करती थीं। स्त्री के प्रति ऐसे व्यवहार को लेखिका कभी भी उचित नहीं

समझती थी। अपने माँ के प्रति ऐसा व्यवहार लेखिका को उनके पिताजी का ज़्यादती लगता था। उनकी सारी जिंदगी पति की डाँट-फटकार सुनते तथा अपने बच्चों की माँगों को पूरा करते गुजरी थी। इस प्रकार लेखिका के जीवन में उसके माँ का व्यक्तित्व का कोई विशेष प्रभाव न पड़ सका। इसलिए लेखिका उन्हें व्यक्तित्वहीन कहती है।

3. आशय स्पष्ट कीजिए-

"बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।"

उत्तर : देशभक्तों ने देश को आज़ादी दिलाने के लिए अपना सर्वस्व देश के प्रति समर्पित कर दिया। आज जो हम स्वत्रंत देश में आज़ादी की साँस ले रहे है यह उन्हीं के कारण संभव हो पाया है, उन्हीं के कारण आज़ाद हुआ है। परन्तु यदि किसी के मन में ऐसे देशभक्तों के लिए सम्मान की भावना नहीं है, वे उनकी देशभक्ति पर हँसते हैं तो यह बड़े ही दु:ख की बात है। ऐसे लोग सिर्फ़ अपने बारे में सोचते हैं, वे केवल स्वार्थी होते हैं। लेखक ऐसे लोगों पर अपना गुस्सा व्यक्त किया है।

4. ‘लखनवी अंदाज’इस निबंध को आप और क्या नाम देना चाहेंगे?

उत्तर : इस कहानी का नाम 'झूठा दिखावा' 'नवाबी शान', या 'आडम्बर' भी रखा जा सकता है, क्योंकि नवाब ने अपनी झूठी शान-शौकत को कायम रखने के लिए अपनी इच्छा को ही दबा दिया। साथ ही उनके नवाबी स्वभाव, सामंती-वर्ग की बनावटी जीवन-शैली व दिखावे को सिद्ध करता है।

5. बालगोबिन भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेला क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

उत्तर : भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले छोड़कर नहीं जाना चाहती थी क्योंकि भगत के बुढ़ापे का वह एकमात्र सहारा थी। पुत्रवधू को इस

बात की चिंता थी कि यदि वह भी चली गयी, तो भगत के लिए भोजन कौन बनाएगा। यदि भगत बीमार हो गए, तो उनकी सेवा-शुश्रूषा कौन करेगा। उसके चले जाने के बाद भगत की देखभाल करने वाला और कोई नहीं था।

प्र. 8. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2+2+2=[6]

कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक़्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूंजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुंधले प्रकाश की
कुछ तुकों और लयबद्ध पंक्तियों की

1. माँ के दु:ख को प्रामाणिक क्यों कहा गया है?

उत्तर : लड़की की माँ ने जीवन में स्वयं कष्ट सहे थे तथा वह जानती थी कि उसकी बेटी नादान है। अत: उसका दु:ख प्रामाणिक था।

2. जीवन के सुख-दुख की लड़की को कितनी समझ थी?

उत्तर : जीवन के सुख-दुख से लड़की आंशिक रुप से ही परिचित थी। उसने अभी जीवन के सुख ही देखे थे, वह दुखों से अभी अनजान थी।

3. माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी?

उत्तर : वह बचपन से अपनी पुत्री को सँभालकर उसका पालन-पोषण एक संचित पूँजी की तरह करती है। जब इस पूँजी अर्थात् बेटी का कन्यादान करेगी तो उसके पास कुछ नहीं बचेगा। इसलिए माँ को अपनी बेटी अंतिम पूँजी लगती है।

प्र.9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=[8]

1. भाव स्पष्ट कीजिए- रूपांतर है सूरज की किरणों का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का !

   उत्तर : प्रस्तुत पंक्तियों का तात्पर्य यह है कि फसल के लिए सूरज की किरणें तथा हवा दोनों का प्रमुख योगदान है। वातावरण के ये दोनों अवयव ही फसल के योगदान में अपनी-अपनी भूमिका अदा करते हैं। फसलों की हरियाली सूरज की किरणों के प्रभाव के कारण आती है। फसलों को बढ़ाने में हवा की थिरकन का भी योगदान रहता है।

2. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर राम के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

   उत्तर : राम स्वभाव से कोमल और विनयी हैं। परशुराम जी क्रोधी स्वभाव के थे। परशुराम के क्रोध करने पर श्री राम ने धीरज से काम लिया। उन्होंने स्वयं को उनका दास कहकर परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास किया एवं उनसे अपने लिए आज्ञा करने का निवेदन किया।

3. 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं, कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

   उत्तर : गर्मी की चिलचिलाती धूप में रेत के मैदान दूर पानी की चमक दिखाई देती है हम वह जाकर देखते है तो कुछ नहीं मिलता प्रकृति के इस भ्रामक रूप को 'मृगतृष्णा' कहा जाता है। इसका प्रयोग कविता में प्रभुता की खोज में भटकने के संदर्भ में हुआ है। इस तृष्णा में फँसकर मनुष्य हिरन की भाँति भ्रम में पड़ा हुआ भटकता रहता है।

4. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

   उत्तर : 'उत्साह' कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है -

   - जल बरसाने वाली शक्ति है।
   - बादल पीड़ित-प्यासे जन की आकाँक्षा को पूरा करने वाला है।

- बादल कवि में उत्साह और संघर्ष भर कविता में नया जीवन लाने में सक्रिय है।

5. शिशु कवि की ओर अनिमेष क्यों देख रहा है?

उत्तर : कवि ने बहुत दिन बाद आकर जब पहली बार पुत्र को मुस्कुराते हुए देखा तो वे सुख से भाव विभोर हो जाते हैं परंतु शिशु उन्हें न पहचान पाने के कारण अनिमेष कवि को देखता रहता है।

प्र. 10. निम्नलिखित पूरक पुस्तिका के प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए। 3×2=[6]

1. 'आप चैन कि नींद सो सके इसीलिए तो हम यहाँ पहरा दें रहा है' - एक फौजी के इस कथन पर जीवन-मूल्यों की दृष्टि से चर्चा कीजिए।

उत्तर : फौजी का जीवन बड़ा ही कठिन होता है। फौजी कठिन से कठिन परिस्थिति में अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। इस कर्तव्य पालन में कभी-कभी उन्हें अपनी जान भी कुर्बान करनी पड़ती है परंतु वे पीछे नहीं हटते क्योंकि एक फौजी के जीवन मूल्य अपने देश की रक्षा और नागरिकों की सुरक्षा ही होती है।

2. बच्चे का नाम भोलानाथ कैसे पड़ा?

उत्तर : बच्चे का वास्तविक नाम तारकेश्वर था परंतु उसके पिता जब उसे नहला-धुलाकर अपने साथ पूजा में बिठा देते थे और उसके ललाट पर भभूत एवं त्रिपुंड लगा देते थे। बच्चे के सिर पर लंबी जटाएँ और भभूत लगाए जाने के कारण ‘बमभोला बन जाते थे बच्चे के पिता इस रूप को देखकर उसे प्यार से भोलानाथ पुकारने लगते थे। इसी कारण बच्चे का नाम भोलानाथ पड़ गया।

3. 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ में सरकारी तंत्र पर किस प्रकार का व्यंग किया गया है?

उत्तर : प्रस्तुत पाठ में सरकारी तंत्र का मजाक उड़ाया गया है। जॉर्ज पंचम की नाक को लेकर प्रशासन में जो चिंता दर्शाई गई है वह उनकी गुलामी और औपनिवेशिक मानसिकता की ओर इशारा करती है। हिन्दुस्तान को गुलाम रखने वाले के सम्मान के प्रति ऐसी चिंता करना प्रशासन की मानसिक गुलामी की तरफ संकेत करता है। कार्य पूरा करने के लिए उचित-अनुचित मार्गों को अपनाना प्रशासन की नासमझी, चापलूसी, जिम्मेदारियों को टालना आदि बताता है।

खंड - घ

[लेखन]

प्र. 11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय निबंध पर लिखिए: [10]

भारतीय ऋतुएँ

भारत में प्रत्येक ऋतू दो-दो महीने रहती है। चैत और वैशाख में वसंत, ज्येष्ठ और आषाढ़ में ग्रीष्म, श्रावण और भाद्रपद में वर्षा, अश्विन और कार्तिक में शरद, मार्गशीर्ष और पौष में हेमंत, माघ और फाल्गुन में शिशिर (पतझड़) भारत में प्राय: सभी स्थानों पर ये ऋतूएँ अपना रूप एक बार अवश्य दिखलाती है।

वर्षाऋतू को वैसे तो जीवनदायनी माना जाता है परन्तु कभी–कभी यही जीवनदायनी प्राण घातक भी हो जाती है कभी बाढ़ आने के कारण जन धन सभी का नुकसान होता है। उसी प्रकार सर्दी और गर्मी का मौसम में भी होता है पर जब ठंड या गर्मी अधिक बढ़ जाती है तो लोगों के पास इससे बचने का उपाय न होने के कारण कई लोग मौत के मुँह में भी समा जाते हैं। मौसम में इस परिवर्तन का ज़िम्मेदार स्वयं मनुष्य ही है जो अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए प्रकृति का जिस प्रकार से हनन कर रहा है उसका

परिणाम ही मौसम में इस प्रकार के अनचाहे बदलाव हमें देखने के लिए मिल रहें हैं।
आज पहले की अपेक्षा हमें बाढ़, सूखा, अकाल, अतिवृष्टि बर्फबारी आदि प्राकृतिक घटनाएँ आए दिन देखने को मिलती है। इस सब का प्रमुख कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन है जिसके परिणामस्वरूप इस तरह की घटनाएँ आज आम हो गयी है। अतः मनुष्य समय रहते न चेता तो वह दिन दूर नहीं जब पूरी मानवता को अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए एक बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

जीवन में खेलों का महत्त्व

मनुष्य के जीवन में आरंभ से ही खेलों का महत्त्व रहा है। खेलों के बिना मनुष्य अधूरा है। प्राचीन समय में तो उसके मनोरंजन का साधन ही खेल हुआ करते थे। स्वयं के मनोरंजन के लिए उसने विभिन्न तरह के खेलों की रचना भी की है और आगे भी करता रहा है। शरीर को स्वस्थ रखने का एक साधन खेल भी है। आज खेल शिक्षा का आवश्यक अंग समझा जाने लगा है। शारीरिक शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सहायक है। सभी प्रकार के कर्तव्यों का पालन स्वस्थ शरीर से ही संभव है। मनुष्य के व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास में खेल-कूद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। खेलों से स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न होती हैं जो समाज को जोड़ने में अपनी भूमिका निभाते हैं।
खेल कई तरह के होते हैं - क्रिकेट, हॉकी, लॉन टेनिस, फुटबॉल जैसे खेलों के लिए बड़े मैदान की ज़रुरत होती है। खो-खो, कबड्डी, टेबल-टेनिस जैसे खेल छोटे मैदान में भी खेले जा सकते हैं। यदि हम नियमित रूप से खेलते रहते हैं, तो हमारा स्वास्थ्य ठीक रहता है। हम चुस्त-दुरूस्त बने रहते हैं। इससे बीमारियाँ भी दूर रहती हैं साथ ही डॉक्टर और दवाईयों में आने वाला खर्चा भी कम हो जाता है। विद्यार्थियों के लिए तो खेल उत्तम औषधि के समान है। पढ़ाई करने के बाद खेलने से मन को नई शक्ति प्रदान होती है। खेलने से विद्यार्थियों में उपजा तनाव कम होता है।

आज हर देश में खेलों को आवश्यक और महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। स्कूलों में बच्चों के संपूर्ण विकास के लिए अनेक प्रकार के खेलों की व्यवस्था होती है, इसलिए माता-पिता भी अपने बच्चो को उसी स्कूल में डालना चाहते हैं जहाँ खेलों को ज्यादा महत्व दिया जाता है। खेलों से सहयोग, उदारता, सहनशीलता, अनुशासन भाईचारे आदि की भावना तथा मेल जोल की आदि जैसे गुण विकसित होते है। खेलों को व्यवसाय के रूप में अपनाने से खिलाड़ी देश-विदेश में यश और धन दोनों कमा रहे हैं। इन सब बातों को देखते हुए हम खेलों के महत्त्व को नकार नहीं सकते हैं। कई राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनिया खेल-क्लबों और प्रतिभाशाली खिलाडियों को आर्थिक सहायता दे रही है। इसके अतिरिक्त प्रांतीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्टार पर खेल प्रतियोगिताओं का समय-समय पर आयोजन हो रहा है। प्रत्येक मनुष्य के लिए आज यह आवश्यक हो गया है की वह अपने आप को खेलों से जोड़कर जीवन को सहेज बनाकर जीने का प्रयास करे।

प्र. 12. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

आपकी कॉलोनी में कुछ असामाजिक तत्त्व (Antisocial elements) आकर बस गए हैं। उनकी गुंडागर्दी बढ़ने के कारण नागरिकों का जीवन कठिन हो गया। अपने शहर के पुलिस कमिश्नर को 80 से 100 शब्दों में पत्र लिखकर उनकी शिकायत कीजिए तथा सुव्यवस्था के लिए शीघ्र कदम उठाए जाने की प्रार्थना कीजिए।

सेवा में,
पुलिस कमिशनर,
आजाद चौक,
चंडीगढ़

विषय : नगर में बढ़ते हुए असामाजिक तत्वों के विषय में शिकायती पत्र।

महोदय

मैं माणिकपुर, आजाद चौक का निवासी हूँ। इस पत्र द्वारा में आपका ध्यान हमारे क्षेत्र में बढ़ते हुए अपराध की ओर दिलाना चाहता हूँ। हमारे यहाँ

पिछले कुछ दिनों से कुछ असामाजिक तत्व आ गये हैं जिसके कारण हमारे क्षेत्र में अपराध की घटनाएँ बढ़ गई है। हर आए दिन कहीं न कहीं से चोरी और लूटमार की घटना सुनाई पड़ती ही रहती है जिसके कारण घरों को अकेले छोड़ना मुश्किल हो गया है, हर समय किसी न किसी को घर में रहना ही पड़ता है। इतना ही नहीं नगर में नशीले पदार्थों का विक्रय खुले आम हो रहा है। सड़कों और गलियों में बच्चों और महिलाओं का निकलना सुरक्षित नहीं रह गया है। बस-स्टॉप तथा चौराहे पर गुंडे किस्म के लोग छेड़-छाड़ करते पाए जाते हैं।

अतः आपसे अनुरोध है कि नगर की सुरक्षा को देखते हुए पुलिस की गश्त बढ़ाई जाए ताकि निवासी सुरक्षित महसूस कर सकें।

सधन्यवाद।

भवदीय

कमल शर्मा

2/42, सरला निवास,

आजाद चौक,

माणिकपुर,

चंडीगढ़

दिनाँक: 27 फरवरी 20xx

अथवा

आप अपने घर से दूर में रहने आए है, अपनी माता को पत्र लिखकर छात्रावास के आपके अनुभव के बारे में 80 से 100 शब्दों में पत्र लिखिए।

रामदेवी छात्रालय

सुभाष मार्ग

नागपुर।

22 फरवरी 20..

आदरणीय माताजी

सादर प्रणाम।

मैं यहाँ ठीक हूँ। आशा करती हूँ, आप सब वहाँ सकुशल होगे।

आप सबको छोड़कर पहली बार अकेली रह रही हूँ। मुझे आप सभी की बहुत याद आती है। पहले दो-तीन दिन जरा भी मन नहीं लगा परंतु अब बहुत-सी लड़कियाँ मेरी सहेलियाँ बन गई है। यहाँ के शिक्षक भी बहुत अच्छे है। कपड़े धोना, बिस्तर लगाना, सभी वस्तुएँ ठीक जगह पर रखना मैं सीख रही हूँ। मैं यहाँ मन लगाकर पढ़ रही हूँ।

पिताजी को मेरा प्रणाम और छोटी को प्यार देना।

तुम्हारी लाड़ली

मीना

प्र. 13. धुलाई के किए प्रयोग किए जानेवाले साबुन के विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए: [5]

धुलाई बार

धुलाई बार से कपड़ों की कर लो सफाई,

किफायती दाम में धुलाई सुहानी।

सर्वत्र उपलब्ध

अथवा

घी के विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए:

सरस घी

रखिए अच्छी सेहत की नींव,

खाईए सरस घी